

डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 11, विलापगीत 4: 1-22

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 11 है, विलाप 4:1-22।

हम इस वीडियो में विलाप अध्याय 4 पर आते हैं और एक बुनियादी सवाल जो हमें पूछने की ज़रूरत है वह यह है कि यह पूरी पुस्तक में कैसे फिट बैठता है? और उस सवाल का जवाब देना बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं है।

यह यहाँ क्या कर रहा है? और हम यह कहने के लिए एक अच्छा मामला बना सकते हैं कि अध्याय 4 अनावश्यक है और कम से कम यह जगह से बाहर है। और इस निष्कर्ष पर पहुँचने के दो कारण हैं। अध्याय 3 में, स्पष्ट रूप से और स्पष्ट रूप से, विषय प्रार्थना, प्रार्थना, आपको प्रार्थना करने की आवश्यकता है, और संरक्षक उन्हें प्रार्थना में शामिल होने का आग्रह कर रहे हैं और कारण बता रहे हैं कि उन्हें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए।

विलाप 3 इसी बारे में है, और उसने अपनी प्रार्थनाओं को एक प्रेरणा के रूप में, एक रोल मॉडल के रूप में, उस पुरुष रोल मॉडल को अध्याय 1 और 2 में सिथ्योन की महिला रोल मॉडल के समानांतर पेश किया है। तो यही अध्याय 3 कह रहा था, और अध्याय 5 अध्याय 3 से बहुत स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ता है। यह एक प्रतिक्रिया है, वे प्रार्थना करते हैं, वे प्रार्थना करते हैं। तो, अध्याय 5 पहेली के अगले टुकड़े की तरह दिखता है। तो, अध्याय 4 वहाँ क्या कर रहा है? और फिर 2, जैसा कि हम अध्याय 3 को पढ़ रहे थे, हम पा रहे थे कि युद्ध के बाद की अवधि में समकालीन पीड़ा के लिए एक आंदोलन था।

अध्याय 1 और 2 घेराबंदी की यादों से बहुत भरे हुए थे, लेकिन अब युद्ध के बाद की अवधि में, दुश्मन द्वारा कब्जे के इस समय में समकालीन पीड़ा है। और अध्याय 3 में हमारे पास जो संदर्भ थे, जो उस पूरी घेराबंदी की स्थिति को पीछे छोड़ देते हैं, वे अध्याय 5 के बहुत अनुरूप हैं क्योंकि अध्याय 5 घेराबंदी के सवालों से बिल्कुल भी भरा हुआ नहीं है; यह युद्ध के बाद यहूदा के कब्जे के बारे में बात कर रहा है। ठीक है, तो अध्याय 5 स्वाभाविक रूप से अध्याय 3 का अनुसरण करता है। लेकिन अध्याय 4 के बारे में क्या? यह वापस वहीं चला जाता है जहाँ हम अध्याय 1 और 2 में थे। यह यरूशलेम के पतन में घेराबंदी की स्थिति पर वापस जाता है, और पिछली यादें फिर से जी जाती हैं।

और इसलिए, अध्याय 4 के बारे में हम क्या कहें? और मैं इसे इस तरह देखता हूँ। मण्डली अध्याय 5 पर जाने के लिए तैयार नहीं थी। गुरु उन्हें तैयार कर रहे थे और उनसे आग्रह कर रहे थे, तुम्हें प्रार्थना करनी होगी। वे प्रार्थना करने के लिए तैयार नहीं थे।

कुल मिलाकर, सिद्धांत यह है कि शोक प्रक्रिया की अपनी समय सारिणी होती है, और हम पहले से यह निर्धारित नहीं कर सकते कि कोई व्यक्ति कितने समय तक शोक मनाएगा या, दूसरे दृष्टिकोण से, उनके शोक में कौन से पहलू आएंगे और मुख्य रूप से किस पर ध्यान देंगे। अंततः, अध्याय 5 में, मण्डली शोक में उस मोड़ पर पहुँच जाएगी जिसकी संरक्षक को लालसा है। लेकिन वे अभी तैयार नहीं हैं, और संरक्षक उस देरी का सम्मान करता है।

वह मण्डली के साथ रहता है, और वह उनके साथ आने का इंतज़ार करता है। और इसलिए हम यहाँ हैं। हम अध्याय 1 और 2 में वापस आ गए हैं। हम इसी तरह के विषयों पर बात करते हैं क्योंकि मण्डली को यही करने की ज़रूरत है।

एक पादरी के रूप में मेरे द्वारा अब तक किए गए सबसे दुखद साक्षात्कारों में से एक, एक मनोरोग इकाई में एक रोगी के साथ हुआ था। रोगी एक महिला थी, एक पत्नी, जो एक बुरे अनुभव से गुज़री थी। और अब वह गंभीर अवसाद से पीड़ित थी।

मैंने पूछा, क्या आपका परिवार आपको सहारा देता है? खैर, उसने कहा, मेरे ससुराल वाले मुझे इससे उबरने के लिए कहते हैं। वे नहीं जानते कि यह कैसा है, और वे जानना भी नहीं चाहते। आपके पति के बारे में क्या ख्याल है? मैंने पूछा।

कभी-कभी, वह मेरा पक्ष लेता है, और कभी-कभी, वह उनका पक्ष लेता है। ओह, कितना दुखद है। ओह, एक ऐसे परिवार के लिए जो समझता है।

ओह, उन दोस्तों के लिए जो समझते हैं, जो इस गरीब महिला के आसपास इकट्ठा हो सकते थे और उसे वह समर्थन दे सकते थे जिसकी उसे ज़रूरत थी। ओह, सहानुभूतिपूर्ण या सहानुभूतिपूर्ण लोगों के लिए जो उस बोझ को साझा कर सकते हैं। विलाप की पुस्तक में संरक्षक ऐसा ही कोई है, भगवान का शुक्र है।

मुझे उम्मीद है कि अगर ज़रूरत पड़ी तो हम भी ऐसे ही होंगे। निश्चित रूप से, गुरु अध्याय 4 में वापस जाकर उनके दुख का अभ्यास करते हैं। वह वापस वहीं जाता है जहाँ मण्डली अभी भी थी।

यही वर्तमान की आवश्यकता थी। और वह उनके साथ और अधिक सकारात्मक चरण की ओर बढ़ने के लिए प्रतीक्षा कर सकता है। इस संबंध में, मैं यीशु के गेथसेमेन के बगीचे में जाने के बारे में सोचता हूँ।

और मैं उस निराशा के बारे में सोचता हूँ जो उसने अनुभव की। मेरा क्या मतलब है? खैर, मैथ्यू के विवरण में, अध्याय 26 में, उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना से उसके साथ रहने के लिए कहा। वह कहता है, मेरे साथ जागते रहो।

मैं बहुत दुखी हूँ। हम जानते हैं कि क्या हुआ। वे सो गए।

और यीशु उनका समर्थन खोने से कितने निराश हुए होंगे। और हमारे आस-पास ऐसे लोग होंगे जो कहेंगे या कहना चाहेंगे, कृपया मेरे साथ जागते रहें। कृपया मेरे साथ उपस्थित रहें।

मैं बहुत दुखी हूँ। और मुझे उम्मीद है कि हम उन्हें निराश नहीं करेंगे। मुझे उम्मीद है कि हम गुरु से एक उदाहरण लेंगे।

वह वहीं रहता है जहाँ मण्डली होती है। और वह, शायद खुशी से नहीं, लेकिन वह आत्मा में उनके साथ अध्याय 1 और 2 में वापस जाता है। इसका मतलब है कि हमें श्लोक 1 से 20 में फिर से अंतिम संस्कार विलाप मिलता है। और इसे मानक तरीकों से दर्शाया गया है।

हमारे पास वह बुनियादी 'कैसे' है। वास्तव में, यह यहाँ दो बार होता है। हमारे पास पहले कभी ऐसा दो बार नहीं हुआ।

और याद रखो, यह एक चीख है। यह एक चीख है। ईचा! ईचा! और इस तरह, वह उनके दुख में शामिल हो जाता है।

और वह खुद के लिए दुख की उस मौखिक ध्वनि को व्यक्त करता है। और फिर दो, श्लोक 1 से 20, में विरोधाभासों के उलटफेर की एक श्रृंखला के निशान हैं। आपके पास अच्छे पुराने दिन हैं, और आपके पास अब बुरे दिन हैं।

असामान्यताओं की एक श्रृंखला। इन उलटफेरों को पूरे अध्याय में छोटी-छोटी कहानियों और कथानक के अंशों के रूप में बताया गया है। और इसलिए, आइए इस अंतिम संस्कार के विलाप के माध्यम से अपना रास्ता बनाते हैं।

सबसे पहले, श्लोक 1 और 2 अकेले ही प्रथम प्रकार की कथा के रूप में खड़े प्रतीत होते हैं: कैसे सोना धुंधला हो गया है, कैसे शुद्ध सोना बदल गया है।

पवित्र पत्थर हर गली के मुहाने पर बिखरे पड़े हैं। अब, वहाँ रूपक हैं। फिर, पद 2 में, हम वास्तविकता, रूपकों के पीछे की वास्तविक स्थिति पर आते हैं।

सिय्योन के अनमोल बच्चे, जिनका वजन शुद्ध सोने के बराबर है, उन्हें मिट्टी के बर्तनों के समान समझा जाता है, जो कुम्हार के हाथों का काम है। और यह मानवीय मूल्य के प्रति सम्मान की कमी को दर्शाता है। मण्डली में एक तरह की बेकार की भावना व्याप्त है।

और यह कुछ ऐसा था जिसे सिय्योन ने अध्याय 1 के मध्य में उन प्रार्थनाओं में से एक में मौखिक रूप से कहा था, क्या यह था? अपनी बेकारता के बारे में बात करते हुए। मैं बेकार हूँ। हाँ, श्लोक 11, हे प्रभु, देखो और देखो कि मैं कितना बेकार हो गया हूँ।

और दूसरों को बेकार समझने से भी बदतर यह है कि हम खुद को बेकार समझते हैं। और यह बात पूरे लोगों के बारे में कही गई है। और इसलिए, हमें पद 2 में यह तथ्यात्मक स्थिति मिलती है, सिय्योन के अनमोल बच्चे।

हम सिष्योन के उस मानवीकरण पर वापस जाते हैं। जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है, उसके बच्चे वास्तव में मण्डली हैं। जो लोग खंडहर हो चुके मंदिर प्रांगण में एकत्रित हो रहे हैं, वे सिष्योन के बच्चे हैं।

और इसलिए, वह अपने बच्चों के बारे में बात कर रही है। और यह दिलचस्प है कि अध्याय 4 में एक फ्रेम, एक समग्र अलंकारिक फ्रेम है, जो कि कम से कम श्लोक 2 में, सिष्योन के इस मानवीकरण के साथ शुरू होता है, जो कि हम अध्याय 1 और 2 में देख रहे थे। और यह उसी नोट पर समाप्त होता है। श्लोक 22 में, हम बेटी सिष्योन, बेटी सिष्योन का उल्लेख करते हैं।

अब, शायद हमें उन विस्तृत संदर्भों पर आने से पहले अध्याय के बारे में अधिक सामान्य रूप से बात करनी चाहिए। अध्याय 4 अध्याय 2 की तरह ही है, लेकिन इसमें वह प्रबल भावना नहीं है जो हमारे पास है, जो सिष्योन और संरक्षक ने स्थिति के लिए लाई थी। लेकिन संरक्षक द्वारा दिखाई जा रही गहरी सहानुभूति है।

हमारे पास मेरे लोग हैं। पद 3 में, मेरे लोग क्रूर हो गए हैं। पद 6 में, मेरे लोगों की सज़ा।

श्लोक 10 में, मेरे लोगों का विनाश। और यह फिर से अध्याय 2 से लिया गया है, और वास्तव में अध्याय 3 से। 2.11 में, मेरे लोगों का विनाश। और इसे 3:48 में उठाया गया था, और मेरे लोगों के विनाश के कारण मेरी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही हैं।

और इसलिए, मेरे लोगों के बारे में बोलते हुए यह गहरी सहानुभूति है, यह मार्मिक सहानुभूति है। और फिर, श्लोक 17 से 20 को देखते हुए, ऐसा लगता है कि गुरु इस विशेष प्रकरण में व्यक्तिगत रूप से शामिल हो गए हैं क्योंकि यह हम और हमें और हमारे के संदर्भ में बोलता है। और इसलिए, संदेश यह है कि मैं आत्मा में आपके साथ खड़ा हूँ, और मैं भी इस संकट में शामिल रहा हूँ।

फिर हमें यह कहना होगा कि यह अध्याय, सामान्य रूप से, अध्याय 1, 2 और 3 की तरह एक एक्रोस्टिक कविता है। लेकिन यह पहले की तुलना में छोटा है क्योंकि छंद तीन पंक्तियों के नहीं हैं। वे केवल दो पंक्तियाँ हैं। इसलिए, हमारे पास हिब्रू वर्णमाला के 22 अक्षरों के अनुरूप 22 दो-पंक्ति वाले छंद हैं। और हमारे पास अध्याय 1, 2 और 3 में जो तीन-पंक्ति वाले छंद थे, वे नहीं हैं। और इसलिए 44 पंक्तियाँ हैं, केवल 44 पंक्तियाँ।

अगर हम विलाप-गीत की पूरी किताब पर नज़र डालें, तो हम पाएंगे कि यह धीरे-धीरे छोटी होती जा रही है। अध्याय 1 और 2 में 67-67 पंक्तियाँ हैं, और अध्याय 3 में 66 पंक्तियाँ हैं।

अध्याय 4 में 44 पंक्तियाँ रह जाती हैं। अध्याय 5 में 22 पंक्तियाँ रह जाती हैं। और ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, कविताओं को छोटा करके साहित्यिक समापन की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाया जाता है।

ध्यान दें कि मैं साहित्यिक समापन कह रहा हूँ, मनोवैज्ञानिक समापन नहीं, जो आपको विलाप में कभी नहीं मिलता, बल्कि साहित्यिक समापन। यह धीमा होने का, अंत तक पहुँचने का उनका तरीका है, प्रत्येक कविता को बारी-बारी से छोटा करके। और इसलिए, हाँ, हमारे पास छंद 1 से 20 हैं, और हम उस अंतिम संस्कार विलाप को देख रहे हैं।

हमने पहले एपिसोड में, हम कह सकते हैं, श्लोक 2 में उस बुनियादी तथ्य को देखा, जो लोगों को समग्र रूप से और उनकी बेकार की भावना को संदर्भित करता है। यह रूपक को उठाता है। आपको वहाँ अच्छे पुराने दिनों का उल्लेख मिलता है।

वे महत्वपूर्ण लोग थे। उन्हें अपनी कीमत और महत्व का अहसास था। वे सोने की तरह थे, शुद्ध सोने की तरह।

वे पवित्र पत्थरों की तरह थे, कीमती पत्थर जिन्हें मंदिर में खजाने के रूप में रखा जाता था, जैसा कि प्राचीन निकट पूर्व में अक्सर होता था। लेकिन अब, वे क्या हैं? वे सिर्फ मिट्टी के बर्तन हैं, जैसे मिट्टी के बर्तन एक दर्जन से ज्यादा मर चुके हैं, और अब उनका कोई महत्व नहीं है। और इसलिए, यह भावना है कि वे गिनती में नहीं हैं और बेकार हैं।

और इसलिए हम यहाँ हैं। यह समग्र रूप से लोगों की बात है। लेकिन उसके बाद, ज्यादातर मामलों में, यह बातचीत है, यह लोगों के भीतर अलग-अलग समूहों तक सीमित हो जाती है और समुदाय के प्रत्येक वर्ग के बारे में बारी-बारी से शोक-सभा में शामिल होती है।

और इसलिए, श्लोक 3 और 4 में, यह उन बच्चों के बारे में बात करता है जो भूख से पीड़ित थे, और वे अब अपनी माँ के स्तनों से दूध नहीं पी सकते थे क्योंकि माँ दूध नहीं बना रही थी। उसे पर्याप्त भोजन नहीं मिल रहा था। और उन्हें ठोस भोजन नहीं दिया जा सकता था।

वहाँ खाने के लिए ठोस भोजन नहीं था। और यह भयानक स्थिति थी। श्लोक 3 और 4 में, यहाँ तक कि सियार भी अपने बच्चों को स्तनपान कराते हैं और दूध पिलाते हैं।

लेकिन मेरे लोग जंगल के शूतुरमुर्गी की तरह क्रूर हो गए हैं। प्यास के मारे बच्चे की जीभ उसके मुँह की छत से चिपक जाती है। बच्चे भोजन के लिए भीख माँगते हैं, लेकिन कोई उन्हें कुछ नहीं देता।

और इसलिए, हमारे पास वह दुखद स्थिति है, पीड़ित बच्चे। और अक्सर टीवी विज्ञापनों में, हम स्क्रीन पर पीड़ित बच्चों के साथ सामना करते हैं जिन्हें मदद की ज़रूरत है। क्या आप इन बच्चों की मदद के लिए पैसे देंगे? और यह एक बहुत ही मजबूत तर्क है।

और इसलिए, प्राचीन यहूदा में ये गरीब बच्चे, स्तनपान करते थे, यह बच्चे के जीवन के पहले तीन वर्षों के दौरान होता था। और इसलिए, यह उनके पालन-पोषण का एक महत्वपूर्ण पहलू था। लेकिन इस तरह से स्तनपान नहीं कराया जाता था और न ही उन्हें खिलाया जाता था।

और विडंबना यह है कि ऐसा लगता है कि लोग क्रूर हैं। वास्तव में वे क्रूर नहीं थे। लेकिन विडंबना यह है कि ऐसा लगता है।

वे उन्हें कुछ क्यों नहीं देते? खैर, सच तो यह है कि उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं था। लेकिन दो तरह से यह प्रतीकात्मक विरोधाभास है। यहाँ तक कि सियार भी अपने बच्चों को स्तनपान कराते हैं और दूध पिलाते हैं।

लेकिन ये औरतें जानवरों से भी कम लगती हैं। वे ऐसा कैसे कर सकती हैं? मेरे लोगों, ऐसा लगता है कि वे क्रूर हैं। और वे जंगल में शतुरमुर्गी की तरह हैं।

और यह लोककथा का एक अंश है। और वास्तव में, हम अय्यूब की पुस्तक में इसके बारे में पढ़ते हैं। अय्यूब अध्याय 39 और श्लोक 14 से 16 तक।

यह शतुरमुर्ग के बारे में बात करता है। और यह श्लोक 13 में कह रहा है कि शतुरमुर्ग के पंख बेतहाशा फड़फड़ाते हैं, हालाँकि उसके पंखों में पंख नहीं होते। यह अपने अंडों को धरती में छोड़ देता है और उन्हें ज़मीन पर गर्म होने देता है, यह भूलकर कि भोजन उन्हें कुचल सकता है और कोई जंगली जानवर उन्हें रौंद सकता है।

यह अपने बच्चों के साथ इस तरह क्रूरता से पेश आता है जैसे कि वे उसके अपने न हों। और इसलिए, यहाँ शतुरमुर्ग के बारे में लोककथा का एक अंश उठाया गया है। और ऐसा लगता है जैसे लोग क्रूर हो रहे हैं।

लेकिन यह सिर्फ दिखावा है। और हम जानते हैं कि वास्तव में ऐसा नहीं है। लेकिन विडंबना यह है कि ऐसा ही लगता है।

और फिर, पद 5 में, आप एक और छोटे परिदृश्य पर आते हैं। जो लोग स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेते थे, वे सड़कों पर मर जाते हैं - जो बैंगनी रंग में पले-बढ़े थे, वे राख के ढेर से चिपके रहते हैं।

और यहाँ एक और विरोधाभास है कि क्या होना चाहिए और क्या है। अमीर लोग अब दरिद्र हो गए हैं। वे अमीरी से कंगाली में चले गए हैं।

और उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था। और इस भयानक गिरावट से वे पीड़ित हैं। और अब वे अमीर नहीं रहे।

उनके बैंक खाते अब नहीं हैं। और इसलिए, यह भयावह स्थिति है कि समाज इस तरह से उलटफेर झेल सकता है। अमीर लोग राख के ढेर से चिपके हुए हैं।

उन्हें बैंगनी रंग के कपड़े पहनने के लिए पाला गया था, जो कि महंगा कपड़ा था। और फिर अगले एपिसोड में, छंद 6 से 8 में, हम छंद 7 से 8 पर वापस आएँगे। हम बाद में छंद 6 पर वापस आएँगे।

यह उन नागरिक नेताओं के बारे में बात करता है जिनके साथ आम तौर पर बहुत सम्मान और आदर के साथ व्यवहार किया जाता है। नागरिक नेताओं को कष्ट सहना पड़ा था। 7 और 8, उसके राजकुमार बर्फ से भी ज़्यादा शुद्ध और दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद थे।

उनके शरीर मूंगे से भी ज़्यादा लाल थे, उनके बाल नीलम जैसे थे। अब, उनका चेहरा कालिख से भी ज़्यादा काला है। उन्हें सड़कों पर पहचाना नहीं जाता।

उनकी हड्डियों पर त्वचा सिकुड़ गई है। वह लकड़ी की तरह सूखी हो गई है। और, ज़ाहिर है, यह भूख से होने वाला शारीरिक प्रभाव है, और ये लोग जो समाज में ऊंचे स्थान पर थे और समाज को चलाने के लिए महत्वपूर्ण थे, उन्होंने भी भूख से होने वाले शारीरिक प्रभाव को झेला है।

और उनका चेहरा कालिख से भी ज़्यादा काला हो गया है। और यह वास्तव में एक शारीरिक घटना है: अगर आप भूखे हैं, तो आपकी त्वचा का रंग बदल जाता है। यह गहरे बैंगनी रंग की हो जाती है।

और यही इन नागरिक नेताओं, इन राजकुमारों के साथ हुआ। श्लोक 8, दूसरे भाग में, उनकी त्वचा उनकी हड्डियों पर सिकुड़ गई है। यह लकड़ी की तरह सूखी हो गई है।

यह हमें उन तस्वीरों की याद दिलाता है जो एकाग्रता शिविर के कैदियों की हैं जिन्हें कई सालों से भूखा रखा गया है और उनसे बहुत ज़्यादा काम करवाया गया है। यह एक तरह की स्थिति थी, लेकिन इस मामले में, यह घेराबंदी और भुखमरी के कारण हुआ था जो वहाँ शामिल थी। और फिर, श्लोक 10 में, हम फिर से माँ के अपने बच्चों के साथ रिश्ते पर आते हैं।

और हम थोड़ी देर बाद श्लोक 9 को देखेंगे। दयालु महिलाओं के हाथों ने अपने ही बच्चों को पकाया है, और वे मेरे लोगों के विनाश में उनका भोजन बन गए हैं। शायद यह सबसे भयावह बात है, कि ये बच्चे जो भूख से मर गए, उनकी लाशों को दफनाया नहीं गया, बल्कि उन्हें भोजन के रूप में इस्तेमाल किया गया।

और यह जितना भयावह है, उतना ही भयावह प्राचीन धार्मिक संदर्भ में है, जहाँ शवों को अशुद्ध माना जाता था। लेकिन इन शवों को सिर्फ़ जानवरों के शवों के रूप में लिया जाता था और उन्हें खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। और यह कोई अनोखी बात नहीं है।

मैं हाल ही में द्वितीय विश्व युद्ध में लेनिनग्राद की घेराबंदी के बारे में पढ़ रहा था, जर्मनों के हाथों इन रूसियों की घेराबंदी। और यह यरूशलेम की घेराबंदी से कहीं ज़्यादा लंबी चली, जो सिर्फ़ 18 महीने की है। यह 900 दिन की, 900 दिन की घेराबंदी थी।

और फिर, मुख्य समस्या उन लोगों के लिए भुखमरी थी जो शहर के भीतर बंद थे। और जो हुआ वह यह था कि वहाँ एक काला बाज़ार था, मानव मांस का एक काला बाज़ार, जो लोग भूख से मर गए थे। अब, श्लोक 10 में एक आकर्षक शब्द है: दयालु।

दयालु महिलाओं के हाथों ने अपने ही बच्चों को उबाला था। वे मेरे लोगों के विनाश में उनका भोजन बन गए। और उस करुणा का क्या अर्थ है? खैर, इसे अक्सर उन महिलाओं के रूप में लिया जाता है जो पहले दयालु हुआ करती थीं और अपने बच्चों के प्रति पूरी करुणा दिखाती थीं, लेकिन अब ऐसा नहीं है।

लेकिन मुझे संदेह है कि वे अभी भी दयालु हैं। और मेरा क्या मतलब है? खैर, वे छोटे बच्चे मर गए थे। जैसा कि मैंने पहले कहा था, छोटे बच्चे सबसे पहले मरेंगे।

और उनके शरीर में भोजन की कमी सहित विभिन्न प्रकार के हमलों का सामना करने की सहनशक्ति नहीं होती है, जिसे वयस्क अधिक आसानी से सहन कर सकते हैं। किशोर और वयस्क अधिक आसानी से सहन कर सकते हैं और कम से कम सहन कर सकते हैं और जीवित रह सकते हैं। लेकिन बच्चे पहले मर गए और परिवार के बाकी लोग बच गए।

और मुझे लगता है कि परिवार के बाकी सदस्यों के प्रति करुणा का प्रयोग उनके जीवन को लम्बा करने और पत्नी के जीवन को लम्बा करने तथा परिवार के बाकी सदस्यों की देखभाल करने में माँ के जीवन को लम्बा करने के लिए किया जाता है। और इसलिए, उसे यह तनाव है, यह तनाव, कि उसे एक पत्नी और माँ के रूप में कितनी दूर तक जाना चाहिए? खाना बनाना मेरा काम है। मुझे कितनी दूर तक जाना चाहिए? और उसने महसूस किया, आखिरकार, अपनी करुणा में, उसे उन मृत शरीरों का भोजन के लिए उपयोग करना होगा ताकि परिवार जीवित रहे।

इन पत्नियों और माताओं के लिए यह एक भयानक तनाव है। श्लोक 11, हम थोड़ी देर बाद देखेंगे। लेकिन श्लोक 12 एक अलग तरह की चिंता है।

हमारे सामने कई तरह की शारीरिक समस्याएँ हैं जो घेराबंदी से जुड़ी हैं। लेकिन अब एक धार्मिक समस्या है, एक बहुत ही ज्वलंत धार्मिक समस्या। और इसे श्लोक 12 में उठाया गया है।

पृथ्वी के राजाओं ने या दुनिया के किसी भी निवासी ने यह विश्वास नहीं किया कि कोई शत्रु या दुश्मन यरूशलेम के द्वारों में प्रवेश कर सकता है। इस श्लोक के बारे में दिलचस्प बात यह है कि यह सिय्योन के गीत की प्रतिध्वनि है। सिय्योन के गीत की एक तरह की उल्टी प्रतिध्वनि।

भजन 76 भजन संहिता की पुस्तक में सिय्योन के गीतों में से एक है। और वहाँ अंत में, ठीक है, श्लोक 11 और 12, अपने परमेश्वर यहोवा से मन्नतें माँगें और उन्हें पूरा करें। जो लोग आस-पास हैं, वे उस व्यक्ति को उपहार लाएँ जो भयानक है, जो राजकुमारों की आत्मा को काटता है, जो पृथ्वी के राजाओं में भय पैदा करता है।

वहाँ, हमारे पास ऐसी स्थिति है जिसमें विदेशी राजाओं ने यहोवा की प्रशंसा की। इसके साथ ही परमेश्वर के शहर सिय्योन के लिए भी प्रशंसा हुई। और इसलिए वह प्रशंसा और वह सम्मान, यही वह प्रतिक्रिया है जो विलापगीत 4 में पद 12 में दिखाई देती है। पृथ्वी के राजाओं ने, पृथ्वी के राजाओं ने, उसी वाक्यांश पर विश्वास नहीं किया, न ही दुनिया के किसी भी निवासी ने, कि शत्रु या दुश्मन यरूशलेम के द्वार में प्रवेश कर सकता है।

क्यों? क्योंकि यह सिय्योन धर्मशास्त्र का एक बुनियादी सिद्धांत था कि सिय्योन अभेद्य है। यदि आप शत्रु हैं तो आप इसके द्वारों को पार नहीं कर सकते क्योंकि ईश्वर वहाँ है, और ईश्वर हमेशा सिय्योन की रक्षा करेगा। हमने इस मुद्दे को पुस्तक में पहले देखा था, और यह फिर से एक ज्वलंत धार्मिक और धार्मिक समस्या के रूप में उभरता है।

यह पुरानी अपेक्षा पूर्व-विदेशी सोच में इतनी दृढ़ता से समा गई थी कि उन्हें इसे त्यागना पड़ा। यह अब लागू नहीं था और वे अपनी आँखों के सामने देख सकते थे कि यह बीज बढ़ता ही जा रहा था और बढ़ता ही जा रहा था-और भगवान उनकी मदद के लिए नहीं आ रहे थे। और इसलिए, राजा कहते हैं, हम विश्वास नहीं कर सकते कि यह सच है।

और यह कुछ ऐसा था जो मण्डली खुद सोच रही थी और यह नुकसान के प्रति आम पहली प्रतिक्रिया है। यकीन नहीं होता कि यह सच है। और इसलिए यह सदमा है और यह इनकार है कि ऐसा कभी हुआ था।

लेकिन यह हुआ है, और आप जानते हैं कि यह हुआ है। अपने मन में आप इसे जानते हैं, अपने दिल में आप इसे स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन आपको इसे स्वीकार करना होगा। और इसलिए, श्लोक 12, सिय्योन धर्मशास्त्र का दुःखद अंत है।

उन्हें नई उम्मीदों की ज़रूरत है, और अध्याय 3 में, गुरु उन्हें नए सिरे से सोचने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यहाँ एक वैध उम्मीद है और यह आपको आगे और आपकी वर्तमान स्थिति से आगे ले जाएगी। लेकिन आप अभी भी शोक मना रहे हैं।

आप अभी भी शोक मना रहे हैं। फिर 13 से 16 तक, समाज का एक और वर्ग है, यरूशलेम समाज, जिसका यहाँ उल्लेख किया गया है। और यह उसके भविष्यवक्ताओं के पापों और उसके पुजारियों के अधर्म के लिए है जिन्होंने उसके बीच धर्मी लोगों का खून बहाया।

वे अंधे होकर सड़कों पर घूमते रहे, खून से इतने गंदे हो गए कि कोई भी उनके कपड़ों को छू नहीं पाया। दूर हो जाओ, अशुद्ध लोग उन पर चिल्लाने लगे, दूर हो जाओ, दूर हो जाओ, मत छुओ। इसलिए, वे भगोड़े और भटकने वाले बन गए, और राष्ट्रों में यह कहा जाने लगा कि वे अब यहाँ नहीं रहेंगे।

खैर, श्लोक 13 सिय्योन धर्मशास्त्र के अंत का दोष उस सिय्योन धर्मशास्त्र के प्रबंधकों पर डालता है, और वे पुजारी और वे भविष्यवक्ता थे। याद रखें, हम पहले उनके बारे में बात कर रहे थे, शालोम भविष्यवक्ता जिन्होंने कहा कि सब कुछ ठीक होने वाला है, और उन्होंने खुशी-खुशी पुजारियों के साथ गठबंधन किया, इस आश्वासन में कि सिय्योन धर्मशास्त्र उन्हें आगे ले जाएगा। और यहाँ इस खंड में, हमें पुजारियों और शालोम भविष्यवक्ताओं का पतन मिलता है, और वे ही हैं जिन पर उनके दरवाजे पर दोष लगाया जाता है, वह दोष।

और इसलिए, अब हम उनके दुःखों के बारे में पढ़ते हैं। और इसमें कहा गया है कि उन्होंने उसके बीच में धर्मी लोगों का खून बहाया, जो बहुत कठोर भाषा है। आपको अध्याय चार में बहुत कठोर भाषा मिलती है जिसे हमें सावधानीपूर्वक समझाना होगा।

और यहाँ, ये पुजारी और शालोम पैगम्बर, शांति के पैगम्बर, जो कुछ भी हुआ उसके लिए अंतिम जिम्मेदारी लेते हैं क्योंकि उन्होंने लोगों को तैयार नहीं किया था, उन्होंने लोगों को पश्चाताप के लिए नहीं लाया था, और उन्हें इसकी कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई। नहीं, भगवान पर भरोसा करें, हमारे साथ, हमारी धार्मिकता या उसके गंदे कपड़ों से कोई लेना-देना नहीं है। यह भगवान है। भगवान आशीर्वाद देने जा रहे हैं, और भगवान कहेंगे कि सब ठीक है। सब ठीक हो जाएगा। और इसलिए, वे अंतिम जिम्मेदारी लेते हैं।

ऐसा लगता है जैसे उन्होंने खुद ही उसके बीच धर्मी लोगों का खून बहाया है। वे इस युद्ध और इस घेराबंदी में मरने वाले अच्छे लोगों के लिए जिम्मेदार हैं। और फिर, यह उनकी पीड़ा के बारे में बात करता है।

वे अंधे होकर सड़कों पर घूमते रहे, खून से लथपथ। जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, हम विशेष रूप से पुजारियों के बारे में सोचते हैं और उनकी सामान्य स्थिति के विपरीत सोचते हैं क्योंकि वे शुद्ध और स्वच्छ रहने का प्रयास करते हैं, और वे खून को नहीं छूते हैं, उदाहरण के लिए। लेकिन यहाँ, वे खून से लथपथ हो जाते हैं।

चारों ओर खून-खराबा हो रहा था, और वे अपने कपड़ों से खून को नहीं रोक पाए। और इसलिए, वे खुद भी अशुद्ध हो गए। वे खून से अपवित्र हो गए, और कोई भी उनके कपड़ों को छू नहीं सका।

और इसलिए दूर चले जाओ, अशुद्ध लोग उन पर चिल्लाने लगे। दूर चले जाओ, दूर चले जाओ, उन्हें मत छुओ, उन्हें मत छुओ, वे अशुद्ध हैं। और हम इन पुजारियों की विडंबना पाते हैं, जो अब तक के अपने पूरे जीवन में सबसे स्वच्छ और पवित्र हैं।

अब वे अपमान का सामना कर चुके हैं। और इसलिए, पुजारी यहाँ बहुत नज़र आते हैं। वे भगोड़े और भटकने वाले बन गए। उन्होंने पड़ोसी देशों में भागने की कोशिश की, लेकिन दूसरे देश उन्हें नहीं चाहते थे।

वे अब यहाँ नहीं रहेंगे। और इसलिए, ये पुजारी जो सामाजिक रूप से सबसे ऊपर थे, कोई कह सकता है, और इतना मूल्यवान, ये लोग, अब वे शरणार्थी हैं, उन्हें वापस कर दिया जाता है, वापस कर दिया जाता है। फिर, श्लोक 17 एक अन्य प्रकार की समस्या और एक अन्य अपेक्षा की कमी की बात करता है।

और यह एक सैन्य अपेक्षा थी। अरे हाँ, हमने पद 16 को नहीं देखा क्योंकि वह अभी भी इन पुजारियों के बारे में बात कर रहा है। पुजारियों को कोई सम्मान नहीं दिखाया गया, बुजुर्गों के प्रति कोई पक्षपात नहीं किया गया।

नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह एल्डर्स है। एल्डर्स का मतलब है बूढ़े लोग और आपको हिब्रू का अनुवाद करने में हमेशा समस्या होती है। क्या यह एल्डर है या यह एक बूढ़ा व्यक्ति है? और मुझे लगता है कि यहाँ यह बूढ़े लोग हैं।

पुजारियों को कोई सम्मान नहीं दिया गया, कोई पक्षपात नहीं किया गया, यहां तक कि वृद्ध पुजारियों को भी नहीं। आप उम्मीद करेंगे कि ऐसा होगा, लेकिन यह एक सामाजिक उलटफेर है कि वृद्ध लोगों को सिर्फ नजरअंदाज किया जाता है, भले ही वे पुजारी हों। लेकिन फिर श्लोक 17, लोगों के पास सैन्य सहयोगी की कमी और जो निराशा महसूस हुई थी।

हमारी आँखें मदद के लिए व्यर्थ ही देखती रहीं। हम एक ऐसे राष्ट्र की प्रतीक्षा में उत्सुकता से देख रहे थे जो बचा नहीं सकता था। और बेबीलोन के खिलाफ इस लड़ाई में, बेबीलोन के खिलाफ इस विद्रोह में आशा थी।

मिस्र हमारे पक्ष में है। मिस्र के साथ हमारी एक संधि है, एक सैन्य संधि है, और वे आकर हमारी मदद करेंगे और बेबीलोनियों को भगा देंगे। और विडंबना यह है कि उन्होंने कुछ समय के लिए ही ऐसा किया।

यिर्मयाह में कुछ श्लोक हैं जो कहते हैं कि। हाँ, थोड़ी देर के लिए, उस घेराबंदी को स्थगित करना पड़ा और सेना को मिस्र की सेना का सामना करने के लिए यहूदा के दक्षिणी भाग में जाना पड़ा। लेकिन बेबीलोनियों ने जीत हासिल की और इसलिए मिस्री भाग गए और इसलिए वे वापस आ गए, बेबीलोनियों ने, थोड़े समय के बाद उस घेराबंदी को फिर से शुरू कर दिया।

और इसलिए, यहाँ के लोगों के पास एक सहयोगी की कमी है। काश मिस्र हमारी मदद के लिए आगे आता। काश हमारे पास यह सैन्य गठबंधन होता।

ओह, कृपया उन्हें आने दो। और वे टूटे हुए नरकट, टूटे हुए नरकट बन गए। यह एक ऐसा वाक्यांश है जिसका उपयोग अशूरियों द्वारा उस समय किया जाता है जब यहूदा तलाश कर रहा था; नहीं, यह वह समय है जब 2 राजा 18 और श्लोक 21 में एक अशूर का दूत यरूशलेम के नेताओं को संबोधित कर रहा था।

और उसने कहा, देखो, तुम अब मिस्र पर भरोसा कर रहे हो, उस टूटी हुई लाठी पर, जो उस पर टिकने वाले हर व्यक्ति के हाथ को छेद देगी, जैसे कि मिस्र के राजा फिरौन, उन सभी के लिए जो उस पर भरोसा करते हैं। और यह अब सच हो गया था। यह एक बार फिर सच हो गया था।

और यहूदा को लग रहा था कि कम सैन्य गठबंधन से कोई फायदा नहीं होगा। फिर भी वे हार गए। हम श्लोक 18 और श्लोक 19 पर वापस आएं और श्लोक 20 पर नज़र डालेंगे।

और यहाँ एक बहुत ही दुखद श्लोक है। और एक बार फिर, यह एक पुरानी आदरणीय उम्मीद है जो धराशायी हो गई है। यह शाही धर्मशास्त्र का अंत है।

पद 20 कहता है कि यहोवा का अभिषिक्त, हमारे जीवन की सांस उनके गड्डों में ली गई थी, जिसके बारे में हमने कहा था, उसकी छाया में, हम राष्ट्रों के बीच रहेंगे। सिदकिय्याह, अंतिम राजा। और वह दाऊद वंश का वंशज था।

और वह दाऊद वंश का अंतिम राजा था। और ऐसे वादे किए गए थे कि राजतंत्र हमेशा कायम रहेगा। यरूशलेम के सिंहासन पर हमेशा एक राजा राज करेगा।

और यहूदा ने इस बात पर यकीन किया। यहूदा ने इस बात पर दृढ़ता से विश्वास किया। लेकिन अब, राजा के पकड़े जाने के साथ ही यह उम्मीद खत्म हो गई थी।

और हमें कहानी सुनाई गई है। हमें 2 राजाओं और अध्याय 25 तथा श्लोक 4 और 5 में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दी गई है। बेबीलोनियों के दृष्टिकोण से मुख्य लड़ाई, घेराबंदी अभियान शहर के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में और उसके आस-पास के द्वारों पर हुआ करते थे। और यद्यपि यरूशलेम के चारों ओर, यरूशलेम की दीवारों के आसपास बेबीलोन की सेनाएँ थीं, लेकिन वे कम सुरक्षा वाली थीं।

और वहाँ अन्य द्वार भी थे जहाँ से शायद आप निकल सकते थे। एक दक्षिण-पूर्वी द्वार था, जिसके बारे में राजा, शाही दल और सेना के कुछ लोगों ने सोचा कि हम वहाँ से निकल सकते हैं। और हम क्या कर सकते हैं, हम जॉर्डन की ओर पूर्व की ओर अपना रास्ता बना सकते हैं और हम पार कर सकते हैं।

और हमने अम्मोन के साथ सैन्य गठबंधन कर लिया है। और अम्मोनियों का राजा हमें शरणार्थी के रूप में स्वीकार करने में प्रसन्न होगा। तो यही योजना थी।

और यह बहुत अच्छा लगा। और वास्तव में क्या हुआ? खैर, 2 राजा 25 श्लोक 4 और 5। राजा, सभी सैनिकों के साथ, राजा के बगीचे की दो दीवारों के बीच के फाटक के रास्ते रात में भाग गया। हालाँकि, कसदियों ने शहर को चारों ओर से घेर लिया था।

तो, वे दक्षिण-पूर्वी गेट से बाहर जा रहे थे जहाँ बहुत ज़्यादा बेबीलोनवासी नहीं थे। और जो थोड़े-बहुत लोग आस-पास थे, वे अंधेरे में उनसे बच सकते थे। और वे अरबाह की दिशा में चले गए।

और वह जॉर्डन घाटी है क्योंकि वे ट्रांसजॉर्डन में घुसने और अम्मोन में सुरक्षित स्थान पर पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और जॉर्डन के पश्चिमी किनारे पर यरीहो के मैदानों में उसे पकड़ लिया। उसकी सारी सेना तितर-बितर हो गई, उसे छोड़कर चली गई।

फिर उन्होंने राजा को पकड़ लिया और उसे रिबला में बेबीलोन के राजा के पास ले गए। रिबला सीरिया में मुख्यालय था और यहीं पर नबूकदनेस्सर था।

और उसने अपनी सेना को एक तीन सितारा सेनापति के साथ यरूशलेम भेजा। जिसने सिदकिय्याह को दण्ड दिया। और उन्होंने सिदकिय्याह के बेटों को उसकी आँखों के सामने मार डाला।

और उन्होंने सिदकिय्याह की आँखें फोड़ दीं। इसलिए, आखिरी चीज़ जो उसने देखी वह थी उसके बेटों को बेबीलोनियों द्वारा मारा जाना। और उन्होंने उसे बेड़ियों में जकड़ दिया और उसे अंधे निर्वासन के रूप में बेबीलोन ले गए।

और इसलिए यह कहानी है। यह मण्डली के लिए एक प्रसिद्ध कहानी थी, जो जानते थे कि यह उनके युद्ध के बाद की स्थिति में हुआ था। और इसलिए, यह शाही धर्मशास्त्र का अंत है।

और यह बहुत दुखद है। सिव्योन धर्मशास्त्र और शाही धर्मशास्त्र बहुत ही समानांतर और जुड़वाँ चीजें थीं। भजन 2 कहता है, सिव्योन पर मैंने अपना राजा स्थापित किया है, परमेश्वर कहता है।

और इसलिए, यह बहुत दुखद है। बहुत दुखद। प्रभु के अभिषिक्त को उनके गड्डों में ले जाया गया।

वहाँ घात लगा हुआ था। और वह फँस गया।

जिसके बारे में हमने कहा था, उसकी छाया में हम राष्ट्रों के बीच रहेंगे। हम सुरक्षित हैं। वह राष्ट्रों के बीच हमारी सुरक्षा की गारंटी देता है।

और यह एक ऐसी आयत है जो मुझे लूका 24 और आयत 21 में एक समानांतर आयत की बहुत याद दिलाती है। उस जोड़े को याद करें जो इम्माऊस के रास्ते पर चल रहे थे। और वे नहीं जानते थे कि यीशु जी उठे हैं।

और यह अजनबी अंधेरे में उनके पास आता है। और वे उससे बात कर रहे हैं। और वे पहचान नहीं पाते कि यह यीशु है।

लेकिन उनके पास यह दुखद कहानी है। और श्लोक 21 में, यह सबसे दुखद है। उन्हें कहना पड़ता है, लेकिन हमें उम्मीद थी कि वह इस्राएल को छुड़ाने वाला था।

हमें उम्मीद थी कि वह इस्राएल को मुक्ति दिलाने वाला व्यक्ति होगा। और इस विशेष बिंदु पर विलाप 4 और श्लोक 20 के बारे में बहुत कुछ ऐसा ही महसूस होता है। खैर, अब, कुल मिलाकर, इस अध्याय में, हमने यह अंतिम संस्कार विलाप किया है, जो दुख और नुकसान की रेखाओं के साथ केंद्रित है।

इतने सारे अलग-अलग प्रकार के नुकसान। और यहाँ, गुरु शोक मनाने की आवश्यकता को पहचानते हैं। अध्याय 1 और 2 की तर्ज पर किसी को अधिक शोक मनाना था। मण्डली को इसी की आवश्यकता थी।

वे इसके बिना नहीं रह सकते थे। जीवन के कई क्षेत्रों में नुकसान और बुरे बदलावों पर दुख हुआ है। सामाजिक समूह और सामाजिक अपेक्षाएँ सभी कई तरह से पीड़ित हैं।

और इसलिए हम यहीं हैं। कुछ आयतें हैं जिन्हें हमने पढ़ते समय छोड़ दिया। और कुछ ऐसी हैं जिन्हें हम फिर से एक अलग नज़रिए से देख सकते हैं।

सबसे पहले, पीड़ा पर जोर दिया गया है, पीड़ा पर जोर दिया गया है, शारीरिक पीड़ा पर जोर दिया गया है। श्लोक 4 में, वे बच्चे जो पीड़ित थे, और इसे पढ़ते समय आपको लगभग रोना आता है, हम स्थिति से इतने दूर हैं कि शिशु की जीभ प्यास के कारण उसके मुंह की छत से चिपक जाती है। और बच्चे भोजन के लिए भीख मांगते हैं।

लेकिन कोई भी उन्हें कुछ नहीं देता। उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। और इसलिए, बच्चों की पीड़ा बहुत ही मार्मिक तरीके से व्यक्त की गई है।

और फिर श्लोक 6 में, हम फिर से श्लोक 6 पर वापस आने वाले हैं, वास्तव में, लेकिन हम अभी टिप्पणी करेंगे। मेरे लोगों की सज़ा सदोम की सज़ा से भी ज़्यादा रही है, जिसे एक पल में ही उखाड़ फेंका गया, हालाँकि उस पर कोई हाथ नहीं रखा गया था। यह उत्पत्ति में उस पुरानी कहानी की याद दिलाता है जिसमें सदोम और अमोरा पर भूकंप और आग ने कब्ज़ा कर लिया था, यह सब एक पल में ही हुआ था।

और इसके विपरीत यहूदा के लोगों के लिए घेराबंदी की स्थिति में दर्दनाक धीमी मौतें हैं। और यह विरोधाभास है कि कम से कम यह तुलनात्मक रूप से आसान था। यह सदोम के लिए एक पल में खत्म हो गया, लेकिन हमारे लिए नहीं।

हम लगातार पीड़ित होते जा रहे हैं। और फिर 18 और 19 में, उस उत्पीड़न के बारे में, हमने पहले इस पाठ को नहीं देखा था, लेकिन यह उन लोगों का एक और समूह है जिन्होंने घेराबंदी के दौरान भागने की कोशिश की, और फिर लोगों ने भागने की कोशिश की, दो समूह। उन्होंने हमारे कदमों का पीछा किया ताकि हम अपनी सड़कों पर न चल सकें।

हमारा अंत निकट आ गया था। हमारे दिन गिने हुए थे, क्योंकि हमारा अंत आ गया था। 19 में, हमारे पीछा करने वाले आकाश में उकाबों से भी तेज़ थे।

वे पहाड़ों पर हमारा पीछा करते रहे। वे जंगल में हमारा इंतजार करते रहे। और दो स्थितियाँ हैं।

एक घेराबंदी के भीतर है। घेराबंदी युद्ध का एक हिस्सा लकड़ी के पहिएदार घेराबंदी टावरों का निर्माण करना था, जो द्वार और दीवारों से ऊँचे थे। और दुश्मन के तीरंदाज इन टावरों के शीर्ष पर चढ़ते थे।

गेट के अंदर, हर गेट के पास एक चौक, एक चौक और एक सार्वजनिक चौक था, और लोग वहाँ टहल सकते थे। और तीरंदाज दीवारों के बाहर निशाना साध सकते थे, लेकिन वे दीवारों और गेट से ऊँचे थे, और वे सार्वजनिक चौकों में लोगों पर निशाना साध सकते थे। और इसलिए लोगों को प्रताड़ित किया जाता था, और यह बहुत भयावह था।

हमारा अंत निकट आ गया था। हमारे दिन गिने हुए थे क्योंकि हमारा अंत आ चुका था। और लोग तब भी जानते थे, हालाँकि घेराबंदी जारी थी, हालाँकि द्वार और दीवारें मज़बूती से खड़ी थीं, लेकिन यह ज़्यादा समय तक नहीं चलेगा।

और अब अंत बहुत करीब था। और फिर 19 में, यह भगोड़े हैं। शायद यह अभी भी घेराबंदी के दौरान है, या शायद यह तब है जब शहर गिर जाता है, लेकिन वे सिदकिय्याह की तरह शहर से भागने में कामयाब हो जाते हैं, लेकिन उनका पीछा किया जाता है।

और सैनिकों, विदेशी सैनिकों को पता चलता है कि वे वहाँ हैं, और वे उनका पीछा करते हैं। वे आकाश में चील से भी तेज़ हैं। उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा किया, जंगल में लेटकर हमारा इंतज़ार किया।

हम बच नहीं पाए। हम बच नहीं पाए। और इसलिए, वहाँ एक दुर्घटना हुई, एक मार्मिक पहलू।

एक और पहलू है जिस पर हमें गौर करने की ज़रूरत है। मैं इसे एक वाक्य में संक्षेप में कहना चाहता हूँ: दुःख जीवन से रंग छीन लेता है। यह एक और तरह का नुकसान है, और यह एक ऐसा विषय है जो कविता के पहले भाग में चलता है।

पहली पंक्ति में, यह सोना था जो धुंधला हो गया था। इसमें थोड़ी समस्या है क्योंकि सोना काला नहीं पड़ता, लेकिन शायद यह गंदा था, या शायद यह सोचा गया था कि यह यरूशलेम के जलने से निकलने वाले धुएँ से काला हो गया है। लेकिन वह पीला सोना, आप उस पीले सोने को इतनी स्पष्टता से नहीं देख सकते।

और फिर, पाँचवें श्लोक में, जो लोग बैंगनी रंग के कपड़े पहनते थे, वे बाहर चले जाते हैं। अब, स्पष्ट रूप से, वे फटे-पुराने कपड़े पहने हुए हैं। और फिर, सातवें और आठवें श्लोक में, हमारे सामने अलग-अलग रंग लाए गए हैं।

वे बर्फ से भी ज़्यादा शुद्ध थे, दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद। उनके शरीर, उनकी गुलाबी त्वचा, मूंगे से भी ज़्यादा लाल थी। उनके बाल नीलम जैसे, नीले काले बाल।

और इसलिए, आपको ये रंगीन संदर्भ मिलते हैं, लेकिन ये सब नीरसता में बदल जाता है क्योंकि ये लोग पीड़ित हैं। और इसलिए, एक संदेश यह है कि इस पीड़ा का एक हिस्सा यह है कि दुःख जीवन से रंग छीन लेता है। एक किताब है जिसका मैं बहुत सम्मान करता हूँ और मैंने विलाप के अपने अध्ययन में इसका काफी उपयोग किया है।

यह वास्तव में भजनों से अधिक संबंधित है, लेकिन विलाप के भजनों से। ऐनी वेम्स द्वारा लिखित विलाप के भजन एक बहुत ही शक्तिशाली पुस्तक है।

और इसे इस तथ्य से ताकत मिलती है कि इस महिला लेखिका ने अपने बेटे को खो दिया; मुझे लगता है कि यह उसके 21वें जन्मदिन के अगले दिन हुआ था। और वह वहाँ थी, उसका इकलौता बेटा, वह चला गया था। और वह भयानक दुःख में डूब गई।

वाल्टर ब्रूगेमैन ने उन्हें अंतिम संस्कार के विलाप की तर्ज पर कविताएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। और इसलिए, यह उनके विलापों में से एक का हिस्सा है। वह इसे विलाप भजन 9 कहती हैं। मैं बस इसका एक हिस्सा पढ़ूँगा।

हे भगवान, दुनिया से रंग गायब हो गए हैं। संगीत बंद कर दिया गया है। खामोश कफन ने बचे हुए हरे-भरे दानों को ढक लिया है।

सब कुछ धूसर है और मौत की बू आ रही है। और यह कविता के पहले भाग में विलाप की बात का सारांश है। दुख जीवन से रंग छीन लेता है।

और फिर कुछ आयतें हैं जिन्हें हमें और करीब से देखने की ज़रूरत है। क्या आपको याद है कि अध्याय एक और दो में, अर्थ और व्याख्या पर जोर दिया गया था। और यह एक सामान्य अंतिम संस्कार विलाप से परे था क्योंकि इसमें ईश्वर शामिल था।

और आपके पास यह धार्मिक आंदोलन था, धार्मिक दृष्टिकोण का सम्मिलन। और इसलिए यहाँ फिर से, अध्याय चार में, हम अर्थ और व्याख्या का मुद्दा पाते हैं। क्या हम इस दुःख को कोई अर्थ दे सकते हैं? और यहाँ जोर केवल एक मानवीय घटना पर नहीं है जैसा कि हमने अध्याय एक और दो में देखा, बल्कि इसमें ईश्वर का हाथ था।

और यहाँ पर हम आपदा की भविष्यवाणियों की प्रतिध्वनि सुनने जा रहे हैं। ईश्वर के उस व्यक्तिगत हस्तक्षेप को याद रखें। मैं उन लोगों पर कुछ बुरा करने जा रहा हूँ जो मेरे खिलाफ हो गए हैं।

और हमने अध्याय दो में नकारात्मक रूप में ईश्वरीय हस्तक्षेप देखा। और यही बात हमें छंद छह में सदोम के उल्लेख के साथ स्पष्ट रूप से मिलती है। हम जानते हैं और हर पाठक जानता है कि कहानी में, ईश्वर इसके पीछे है।

मेरे लोगों की सज़ा सदोम की सज़ा से भी ज़्यादा बड़ी है। और यह बहुत ज़्यादा, परमेश्वर के हाथों है। और वह दर्दनाक धीमी गति से मृत्यु परमेश्वर के हाथों थी।

और फिर श्लोक 11 में, हम आत्मा में अध्याय दो में वापस जाते हैं, प्रभु ने अपने क्रोध को पूरी तरह से प्रकट किया। उसने अपना उग्र क्रोध उंडेला। उसने सिथ्योन में आग जलाई जिसने उसकी नींव को भस्म कर दिया।

और अगर हमें सिर्फ़ एक श्लोक दिया जाए और पूछा जाए कि विलाप में यह कहाँ है? हम अध्याय दो कहने के लिए इच्छुक होंगे, लेकिन नहीं, यह अध्याय चार में है। और वहाँ क्रोध और क्रोध और इस आग का संदर्भ है और यह कैसे फिट बैठता है। इसकी एक साहित्यिक उपयुक्तता है, कोई भोजन नहीं और उन्हें अपने भोजन के रूप में मृत बच्चों का उपयोग करना पड़ा।

खैर, कम से कम कहीं न कहीं भोजन तो था और आग के पास अपना भोजन था जिसने सिय्योन की नींव को जला दिया। तो, भोजन का एक नया विडंबनापूर्ण उल्लेख, लेकिन मुख्य बात यह है कि यह भगवान के हाथों है। और फिर श्लोक 13 में, यह भविष्यद्वक्ताओं के पापों और पुजारियों के अधर्म और इस प्रतिशोध के लिए था।

यह धार्मिक कारणों से है। और इस विशेष बिंदु पर इस विशेष समूह के साथ यह अपराध बोध का विषय सामने आता है। और फिर पद 16 में, प्रभु ने स्वयं उन्हें तितर-बितर कर दिया है।

वह अब उन पर ध्यान नहीं देगा। ये पुजारी और भविष्यद्वक्ता हैं, एनआईवी, वह अंतिम वाक्यांश, परमेश्वर अब उन पर नज़र नहीं रखता। परमेश्वर अब उनकी रक्षा नहीं करता।

ठीक है, तो अर्थ, व्याख्या बहुत ज़्यादा थोपी गई है। यह वास्तव में दुख नहीं है, लेकिन ईश्वर के काम करने के इस प्रतिबिंब में अपराधबोध भी है। लेकिन फिर अंत में, अंत में, हम अंत तक नहीं पहुंचे हैं।

मैं 1 से 20 तक की आयतों के बारे में बात कर रहा हूँ, लेकिन 21 से 22, ओह माय, यह बिलकुल अलग है। फिर भी, फिर भी, एक बहादुरी है। यहाँ, हमारे पास विश्वास की एक मजबूत पुष्टि है, जैसे कि भजन विलाप में है।

हालाँकि हमने पहले भी अंतिम संस्कार के लिए विलाप किया है, अब हम एक ऐसे तत्व पर आते हैं जो भजनों में प्रार्थना विलाप से संबंधित है, जो विश्वास की एक मजबूत पुष्टि है। और इन सभी नकारात्मक उलटफेरों के बाद, विश्वास की इस पुष्टि में भविष्य के लिए एक सकारात्मक प्रति-उलटाव का वादा किया गया है। हे एदोम की बेटी, तुम जो हमारे देश में रहती हो, आनन्दित और प्रसन्न हो।

परन्तु तुम्हारे लिए, प्याला गुजर जाएगा। तुम नशे में हो जाओगे और अपने आप को नंगा कर दोगे। हे सिय्योन की बेटी, तुम्हारे अधर्म का दण्ड पूरा हो चुका है।

वह तुम्हें अब और निर्वासन में नहीं रखेगा। परन्तु हे एदोम की पुत्री, वह तुम्हारे अधर्म का दण्ड देगा। वह तुम्हारे पापों को उजागर करेगा।

और एक टिप्पणीकार का कहना है कि यह पूरी किताब में आशा की सबसे मजबूत अभिव्यक्ति है। और यह बहुत महत्वपूर्ण है। और यह अध्याय 3 के सकारात्मक रुख की पुष्टि करता है।

और यह आशा को याद दिलाता है। और इस तरह, यह अध्याय पाँच के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। हमने एदोम का उल्लेख किया है।

और एदोम को, कभी-कभी पुराने नियम में, यहूदा का सबसे बड़ा दुश्मन माना जाता है। उदाहरण के लिए, हम भजन 137 में पाते हैं, जो यरूशलेम के पतन को दुखद रूप से देखता है, हम पाते हैं कि, हे प्रभु, एदोमियों के विरुद्ध, यरूशलेम के पतन के दिन को याद करो, उन्होंने

कैसे कहा, इसे तोड़ दो, इसे इसकी नींव तक तोड़ दो। और यह बेबीलोनियों के बारे में शिकायत करता है।

लेकिन पहला दोष एदोमियों पर लगाया गया है। और जो कुछ वहाँ कहा गया है वह ओबद्याह की पुस्तक से बहुत हद तक जुड़ा हुआ है। और एदोम, एदोम, एदोम और यरूशलेम के पतन और उसके बाद एदोम की भूमिका के खिलाफ़ एक पूरी तीखा आलोचना है।

उन्होंने सेना में शामिल हो गए; उन्हें यहूदा के सहयोगी बनना था, लेकिन उन्होंने यहूदा के साथ सेना में शामिल हो गए। खैर, आप कह सकते हैं कि वे बुद्धिमान थे, और वे समझदार थे, और वे ऐसे दुश्मन के खिलाफ़ खड़े नहीं होने वाले थे जिसका वे सामना नहीं कर सकते थे। लेकिन यहूदा के दृष्टिकोण से, यह वहाँ था: वे खुश थे; आप अपने भाई के दुर्भाग्य के दिन पर खुश थे।

और एक भयानक बात यह है कि जब शरणार्थी पूर्व की ओर भागे, तो एदोमियों ने उनकी सीमा पर खड़े होकर उन शरणार्थियों को पकड़ लिया और उन्हें तब तक पकड़े रखा जब तक कि उनका पीछा करने वाली बेबीलोन की सेना ने उन्हें पकड़ नहीं लिया और उन्हें सौंप दिया, बस ऐसे ही। और इसलिए हम यहाँ हैं। ओबद्याह इस कमी को बहुत हद तक पूरा करता है, कोई कह सकता है, जहाँ तक इस आयत का सवाल है। और इसलिए, यह कहता है, ठीक है, हँसो, आनन्द मनाओ और खुश रहो, लेकिन तुम आखिरी हँसी नहीं पाओगे।

आखिरी हँसी आपकी नहीं होगी। और कप का जिक्र है, यह क्रोध का कप है। ओबद्याह, फिर से, 15 और 16, कहता है कि एदोम क्रोध के उस कप का अनुभव करने जा रहा है।

और यिर्मयाह 25 में, इसे बहुत विस्तार से विकसित किया गया है, क्रोध का प्याला। और आपको याद होगा, इसे सुसमाचारों में एक बिंदु पर उठाया गया है; मुझे लगता है कि सभी तीन सुसमाचारों में इसका उल्लेख है, लेकिन हम मैथ्यू को देखेंगे। मैथ्यू 26, और श्लोक 39, गेथसेमेन के बगीचे में यीशु, थोड़ा आगे जाकर, यीशु ने खुद को जमीन पर गिरा दिया और प्रार्थना की, मेरे पिता, यदि यह संभव है, तो यह प्याला मुझसे दूर हो जाए, फिर भी वह नहीं जो मैं चाहता हूँ, बल्कि वह जो आप चाहते हैं।

और इसलिए वह प्याला नए नियम में, यीशु के अनुभव में जीवित है। और फिर अंत में, श्लोक 22 में, हमें सिय्योन के भविष्य और एदोम के भविष्य के बीच यह अंतर मिलता है। और इसे मैं ट्रैफ़िक लाइट धर्मशास्त्र कहना पसंद करता हूँ।

जब मैं अपनी बाइक चला रहा होता हूँ और मुझे ट्रैफ़िक लाइट पर रुकना पड़ता है, तो मैं क्या देख रहा होता हूँ? मैं चौराहे पर लगी लाइट को देख रहा होता हूँ। और जब वह लाल हो जाती है, तो मैं जानता हूँ कि वह मेरे लिए हरी हो जाएगी। और मुझे लगता है कि यह अद्भुत है।

यह लाल हो रहा है। और इसलिए, मुझे बस कुछ ही सेकंड में ज़ूम करके आगे बढ़ जाना चाहिए। और इसलिए, एदोम के लिए लाल रोशनी को श्लोक 21 में प्रस्तुत किया गया है।

और 22 के अंत में इसकी पुष्टि की गई है: हे बेटी एदोम, तुम्हारे अधर्म का वह दण्ड देगा, परमेश्वर दण्ड देगा, और वह तुम्हारे पापों को उजागर करेगा। लेकिन इसका अर्थ है सिथ्योन के लिए हरी बत्ती। और वह हरी बत्ती स्पष्ट रूप से बताई गई है।

एदोम के लिए बुरी खबर का मतलब सिथ्योन के लिए अच्छी खबर है। और इस तरह, तुम्हारे अधर्म की सज़ा पूरी हो गई है। यह पूरी हो गई है।

और वह तुम्हें अब और निर्वासन में नहीं रखेगा। या, एनआईवी में, वह तुम्हारे निर्वासन को लम्बा नहीं करेगा। और इसलिए, इस अध्याय चार के अधिकांश भाग में उस नीरस और गंभीर के बाद, हम एक सकारात्मक कथन पर आते हैं।

और यह अध्याय पाँच में हम जो पढ़ेंगे उसके लिए एक आधार तैयार करता है। और उम्मीद है कि यह मण्डली के लिए अंतिम और सफल प्रेरणा है कि वह वास्तव में परमेश्वर के सामने प्रार्थना करने आए, जैसा कि गुरु आग्रह कर रहे थे।

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में है। यह सत्र 11, विलाप 4:1-22 है।